श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

तृतीय वर्ष

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : ४

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ तृतीय वर्ष

ऐनरोलमेन्ट नंबर जानेवारी उत्तरपत्रिका शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	समवाय
(२)	कार्मणयोग
(३)	आ. पार्श्वचंद्रसूरि
(४)	शुभकर्म
(५)	एक मंत्रयुक्त
(६)	मध्यम
(७)	समुद्घात
(८)	नियतिवाद
(९)	क्रियोद्धारक
(१०)	भव्यत्व
(११)	विजयादेवी
(१२)	वायुकाय
(१३)	क्रांतिकारियो
(१४)	मंखलिपुत्र
(१५)	चैत्रवालगच्छ
(१६)	तलस्पर्शी
(१७)	नयविजयजी
(१८)	गर्भजतिर्यंच, मनुष्य
(१९)	असत्य
(२०)	स्मशान

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	पंन्यास साधुरत्न
(२)	न्यायविशारद न्यायाचार्य
(३)	आ. मणिरत्नसूरि
(४)	सिध्दसेन दिवाकर
(५)	पुरुषार्थ
(६)	वीरदत्त
(७)	जसवंतकुमार
(८)	राजा जैत्रसिंह
(९)	खारह
(१०)	तिसरा और चौथा
(११)	विकलेंन्द्रिय
(१२)	केवलज्ञानी
(१३)	अंतर्मुख
(१४)	नियतिवाद
(१५)	ध्यान

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	संख्यात
(२)	स्तवन करता हूँ
(३)	पढ़ोके
(४)	जिनके
(५)	युक्त
(६)	सुवर्ण कमलोंपर
(७)	सिवाय, अन्य
(८)	करेंगे
(९)	समग्र
(१०)	अपकाय
(११)	स्तुति करनेसे
(१२)	प्राप्त करते है
(१३)	पुरुषार्थ
(१४)	उसे
(१५)	काययोग
(१६)	स्तवना की गई
(१७)	सुर्य
(१८)	दंडकमें उपन्न
(१९)	नियति
(२०)	मथनी

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	6	(६)	2
(२)	5	(७)	9
(३)	7	(८)	4
(४)	8	(९)	10
(५)	3	(१०)	1

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	5
(२)	7
(३)	32
(४)	9
(५)	4
(६)	3
(७)	16
(८)	108
(९)	7
(१०)	5

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१)	✓
(२)	✓
(३)	×
(४)	×
(५)	×
(६)	✓
(७)	×
(८)	×
(९)	✓
(१०)	×

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१)	8
(२)	15
(३)	1
(४)	12
(५)	7
(६)	9
(७)	10
(८)	20
(९)	17
(१०)	18

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण
	+		+		+		+		+		+		+		=	

रीमार्क

जांचनेवाले की सही

प्रश्न - ८

१. केवली समुद्घात : आत्मा स्वस्वभावमें रहे आत्मप्रदेशोंको वेदना, कषाय, वैक्रिय, मरण, तेजस, आहारक और केवली समुद्घात इन सात कारणोंसे पर स्वभावमें परिणमता है। केवली समुद्घात केवलज्ञानीको ही होता है। आठ समयमें केवली समुद्घातकी क्रिया पूर्ण होती है। प्रथम समयमें केवली आत्मप्रदेशोंको ऊर्ध्व और अधो लोकान्त तक शरीरसे बाहर निकालकर दंड बनाता है। दुसरे समयमें आत्मप्रदेशको पूर्व पश्चिम फैलाकर कपाट बनाता है। तिसरे समयमें मथनीकी रचना तो चौथे समयमें समस्त राजलोकमें आत्मप्रदेशोंको फैलाकर चौदह राजलोक भर देता है। इससे कर्मनिर्जरा जल्दि होती है। पाचवे समयमें फैले आत्मप्रदेशोंको वापिस खिंच लेता है। छट्ठे समयमें मथनी को समेटता है। सातवे समयमें कपाट संहरित करता है, आठवे समयमें दंड को संहरता है और पुनः स्वभावस्थ होता है।

२. पृथ्वीकाय दस पदके साथ उनकी गति-अगति समझावो : पृथ्वीकायादि दस पद याने पाच स्थावर → पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वनस्पतीकाय, वायुकाय + तीन विकलेन्द्रिय → बेइंद्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिंद्रिय + गर्भज तिर्यंच + गर्भज मनुष्य। जीव जैसे कर्म करता है उसके अनुसार उसे गति मिलती है। शुभगतिमें जानेकेलिए शुभकर्म करने पडते है। पृथ्वीकाय दस पदोंके जीव पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतीकायमें उत्पन्न होते है। पृथ्वीकायादि दस पदोंसे निकले जीव तेउकाय, वायुकायमें उत्पन्न होते है। पृथ्वी, अप, वनस्पतिके जीव दस पदमें आते है। इन दस पदोंमें तेउकाय वाउकायमें जाते है। गर्भज तिर्यंच और मनुष्य सात नरकोंमें उत्पन्न होते है। नरकसे निकले जीव गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य इन दोनोंकेसिवा अन्य दंडकमें उत्पन्न होते नहीं।

३. सद्दालपुत्र व महावीर प्रभुकी चर्चा : नियति याने पहलेसे निश्चित किया हुआ। यह माननेवाले भक्त कुंभार सद्दालपुत्रको सत्य समझानेकेलिए प्रभु पूछते है। 'सद्दालपुत्र ये सारे मिट्टीके पात्र अपनेआप बनते है या तेरे प्रयत्नोसे?' सद्दालपुत्र — नियतिके बलसे। तब प्रभु पूछते है — यदि कोई आदमी लकडेसे तुम्हारे बर्तन फोडे या तुम्हारी पत्नीपर बलात्कार करे तो इन कुकृत्योंको जबाबदार वह आदमी होगा या नियति? सद्दालपुत्र — आदमी। तब प्रभु कहते है — याने इसका अर्थ तुम उस आदमीको इस कार्यका जबाबदार मानते हो पर जब प्रत्येक कार्य नियतिबद्ध है तो फिर उस आदमी को उसके कार्योंका जबाबदार किसलिए मानना? क्या नियतिवादका अर्थ अपने पापोंको नियतिवादके नाम पर ढक देना और दुसरोंके पापों का बदला लेने नियतिवादको परे सरका दे इससे प्रगति होगी। जगतमें व्यवस्था बनेगी? — प्रभुकी बात सुनते सद्दालपुत्रकी आँखे खुली।

४. आ. जगच्चंद्रसूरिको हीरा व तपाका बिरुद कैसे मिला? समझावो : श्री जगच्चंद्रसूरि त्यागी, वैरागी तथा चारित्र धर्मके चुस्त आग्रही थे। आगमोंके ज्ञाता थे। उनके अर्थोंके गहन चिंतक थे। मुनि समुदायमें कालवश क्रियाशिथिलता व्याप्त हो गई थी। उसे दुर करने वे चिंतित और उत्सुक थे। इस आगमोक्त क्रिया को प्रतिष्ठित और सफल बनाने, असाधारण बनाने हेतु उन्होंने असाधारण त्याग वृत्ति स्वीकारी और दृढ मनोबलपूर्वक निरंतर श्रम करके अद्भूत हीर दर्शनिकेकारण तथा आघाटपूरमें 32 दिगंबरआचार्योंके साथ वाद कर विजय प्राप्त करनेकारण उन्हें 'हिरा' का बिरुद मिला। तथा आजीवन आयंबिल तप शुरु करनेके 12वर्ष दरम्यान आहाडपूर नदि किनारे आतापना लेकर ध्यान करनेसे उनका रूप, तेज और प्रभाव बढ गया। महातपस्याके कारण उन्हें तप 'बिरुद मिला और उनके शिष्यपरंपराने 'तपागच्छ' के रूपमें प्रसिद्धि पायी।

५. शांतिस्तवमें भ. शांतिनाथको मिले विशेषण बतावो — 1) व्यवस्थित वचनवाले 2) भगवान 3) द्रव्य तथा भावपूजाके योग्य 4) जयवान 5) यशस्वी 6) योगीश्वर 7) चौत्रीस अतिशयरूप महासंपत्तिसे युक्त 8) प्रशस्त 9) त्रैलोक्यपूजित 10) शांतिके अधिपति 11) सर्व देवसमूहके स्वामीओंसे विशिष्ट प्रकार से पूजे गये। 12) अजित 13) विश्वके लोगोंका रक्षण करनेमें तत्पर 14) समग्र भय समूहका नाश करनेवाले 15) सभी उपद्रवोंका शमन करनेवाले 16) दुष्ट ग्रह, भूत, पिशाच तथा शाकिनीओंके द्वारा उत्पन्न पीडाओंका अत्यंत नाश करनेवाले ऐसे शांतिनाथ भगवानको नमस्कार हो।